TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4466**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥श्रीगणेशायनमः॥ अथपनसीहतनसखोंमे।
॥श्रीगणपतिगुरनांमउचारे॥ धर्मसीलसं
तोषनिहारे॥ विधिसोंसबैंविवेकबिचारे।
जबतुमकारजसबैंसुधारे॥१॥ नित्यप्रातक
रसुध्यप्रणांम॥ सदासुमरिलेहरकोनांम॥
धर्मकीकेधामधर्ममेंरहिये॥ सबसोंबाणीहि
तकीकहिये॥२॥ सांचदयाजसहिरदेधार॥
दुष्टोधर्मेहेपरउपगार॥ बेरनकरिजेंहव
सिबोवास॥ बेरीकोमतकरविसवास॥३॥
मतकरसजनघरबोहार॥ चलिसेकुलेको

धर्म बिचार॥ मात पिता गुर आंण न षंडे॥ मो
टां सूं तुम बाद न मंडे॥ ४॥ झगडे साषन दी
जे झूठी॥ अकिल षोड दे नंग अरु बूंटी॥ म
तलब्ब पाडो सीस मूंडलो॥ अपने पर लेचू
कर मूलो॥ ५॥ आष धन सें कर उपगार॥ आ
मिन लिकर देय उधार॥ छली पूंजी मत क
रि रिण रोग॥ जो तू करे सु पहली भोग॥ ६॥ घ
न स्ती छेह न कीजे बास॥ पापी के न्हि रैजे
पास॥ ऊंचो मति सोवे आकास॥ गिरवा को २
मत करे बिसवास॥ ७॥ नारि न कूं कुलभेद न

दीजे॥ सांझ परे न्हि पंथ गहीजे॥ पूत पढा
वो राषो हाथ॥ लाडु छिआडे छोरा साथ॥ ८
॥ नांन्हीं कूं मत जो एनो न्हां॥ आगंतक रैरा
षे छांनां॥ अधिकारी सूं न कीजे बैर॥ राजा सें
गक्या पार सिर॥ ९॥ जोगी राजा सें का जंग॥
काम सुधारे यन के संग॥ काया राषि रत
पनी कीजे॥ दांन जस रषा लाह दीजे॥ १०॥
जा लिम सूं हे जल दीजबे॥ पांछे पुरसां
हीलो कूबा॥ बेदां सूं मत रपो बैर॥ पाणी बु
रा पीउन कीलेर॥ ११॥ बुहार के रे गलि कादि 2

गवास॥ नारिकुलछन धनकोनास॥ मद
२ केबसमतराषोतनकूं। जोनरहेतौटारे
दिनकूं॥ २२॥ मालपरायोषामतरहे॥ कड
वावचननमुषसेकहे। देलड-तोनेंजोतू
देषे। नलाकारनहितरैलेषे॥ २३॥ छोडेम
तमोटांकीजोड। छोकरडांकीरामतितै
ड। गांवजजातांपंथगहीजे॥ मनविचार
कहूनकहीजे॥ २४॥ पूंजीमाफिकसछा
लेसाज॥ षरीदकरैतौपहलीनाज॥ बेरी २
नैंबैरीमतजाषो॥ रासघणोंपरछांतोरा

षो॥ २५॥ साषविनांलिषतूंमतमांडै॥ घरम
छोड-वोकरनटांडै॥ नाजनकीजेसांचेलेषे
।जूंठसांचुनेंसबजगदेषे॥ २६॥ झीतकरोतुमा
गांवधणीसूं॥ नारिनमेंनारीअपणीसूं॥ च
लताबलजसबैसैंनारो॥ हितकोसापक
देनविसारो॥ २७॥ अपनेंपहरैचोकसजागो
।सोवैजबमतसोवेनागो॥ चोकसचूकाहेवै
चोरी॥ गाफिलतूंकरिलेसबजोरी॥ २८॥ बीज
नलेतूचोरीवाली॥ मूलनपरबोगारीका
ली॥ फूंकदेननिदाबोदीवो॥ पांणीबिनक्षो 3

ऐमतपीवो॥२१॥धर्मबढेंसुषपावैजीव॥सुष
३ करिमहलनिनिश्चकनीव॥ऐसनजरिये
धरियेधीर॥सहजैंनीरबढेतलसीर॥२२॥पा
पकरमसूंबचजेबीर।पुन्यकाजमैंकरिले
सीर।षोटांसूंनीकरोमनलाई।प्रभुमांनैंसो
करैसोठीक॥२३॥बैमेंबातकरैजोदूजो॥बि
नांबुलायोजायनतीजो॥कारजआपबि
चाररदीजे॥चूकजायेंपररोसनकीजे॥२४॥
मुगतेकूंमतदेस्याबास॥मतकूरजाचक ३
निपटनिरास॥नांकरसूंलोकिसीकीनिंदा।

नांमरहैनेकीकाजिंदा॥२५॥गुणलोपेसोमां
णसनांन्हें॥गुणजोकरसीकदेनछांनें॥दी
जेआदरजोकोईआवै॥जहांनआदरतूं
मतजावै॥२६॥नहिंहँसजेबिनकारजहेत।
मूरषबाजेकहैंअचेत॥कर[illegible]अडि-
गआसणमतबैठि।बिनजांणेंपरघरम
तिपेठि॥२७॥सारेदिनतहिंसूतोरहियै॥अ
नजलछांण्योबील्योगहियै॥एषेमतम
लमूतरबाधा॥षाजेमतफलनीबांधा॥
२८॥बस्त्रपराईतूंमतषोलै॥चलनसांचसौं 4

कोयनबोलै॥जीमींअणिलोमोजननजरियां॥
४ गर्जनकीजेकारजसरियां॥२४॥पैठेमतअ
तिणहरैपांणी॥तोड्ठैमतहितकड़वीबांणी
॥रसतामैंमतषावैफिरतो॥साजेअपणेअं
जें गजैरतो॥२५॥सबसूंरापोहितव्योहार॥ट
हलनबड़ांकीसमझेसार॥सपचलोजनमू
छनचालै॥जैकोमारगनिश्चैटालै॥२६॥
कड़वाबचनजहैतूंकार॥जैसैंसर्पकरैफूं
कार॥बडोनकहियेअपणोनांव॥करि ४
हैनिंदासिगरोगांव॥२७॥बचनजकहतां

उपजैलाज॥जैसोमतबोलोबेकाज॥संप
नांवमतलेहिसैंवारा॥आठपहरहोसीदु
षआरा॥२८॥भोजननपीछेंछिनबिसराम॥
बाकीकीजेजसकेकाम॥हटमतराषोयामैं
हांण॥तुरतछोड़यहटकीबांण॥२९॥बैर
नकीजेअदनांसेती॥रछ्याकीजेबनैंसुजे
ती॥पंडितमूरषकाकरिभेद॥बिद्यापढम
तमांनैषेद॥३०॥बातदुटपीकहियेदबी॥कु
हियेबचनसुणैसबी॥सीषसबासेकहि
समझाय॥जनीकरणसुनिओरतपाय॥३१॥

तथानसीहत॥ श्रीपरमेश्वरकूं जांणों अ
५ रसर्वजीवके दरद आपकी आंमाजैसा जा
णों॥२॥ परस्त्रीमातासमांन अरपरधनप
त्थर जांणों॥ अरलीन अलीनका भेदकरो
॥३॥ कैसबोलो अरसर्वकापरदारखो॥ अर
बडांकेमनकूंपिछांणों॥ आपकामनकोभे
दकोईकूं मतकहो॥ जैसा तुमकूं प्याराहै औ
रकूंनहीं॥४॥ हितलोटैनकेपरखोटेतामूंहुस
मनपजे दुखमें हितरखे सोहितहै॥५॥ बार ५
बाड़ीचुगलपाखंडी नाहोचितलाकहें तोभी

सेंदूररहोइनसेंजनाई दूररहेतीहै॥६॥ कु
डेकुलछनीअरैबीजैसेंकांणों जंगहापा
गलामांजरपापीबाकचालीवीगणों अ
रजोकूंबुझीहो मनसेंनिडररहीरहनां।
॥७॥ नलेबुरे आदमीकूंपिछांणों। आगुणी
औगुणकूंछिपाताहै। अरजोतुममेंगुन
होताहै जिसकूं प्रगटकरताहै॥८॥ मसल
तऔरतसेंबरबीलाद्वे॥९॥ जाकेपरजा
वेजाकेघरकी औरतसेंमतबतलावो॥ बा
तकियेबटालगे अकेलेबतलायें अैबल 6

नैं
गै॥१९॥ आपजी तनतनमन आप बसिर है तो प
६ राये घर जाय मे परसो हुये नहीं॥२०॥ कोई सें
हित कीजे तो पहली निश्चे कीजे जो यासं-
हित निभैगा नि भता जांन ये तो कीजे अर
बिनां बिचारें का हित टूटै जब दुख उपजै पि
सतावा आवै॥२१॥ कपटी अर देह अपणों
कूं पाकर राखो जैसें तन सें कपड़ा मलीन हो
ता है तैसे ही कुपात्र सें मन मैला होता है॥
२२॥ अपने फरजंद सें गाफिल मत रहो जहां
तक भली बुरी कूं न जांणें॥ अरदस लोकप ६

रलोक कूं न समझै॥२३॥ धन दस लोक परा-
लोक के बास्ते कियै है छोड़ जांणे कूं नहीं क
रियै है॥ छोड़णां येता जिससें ग्रहस्ती का पी
छा सुधरै अर अतीत एतामी नहीं छोड़े।२४।
मो जा पायो स पहली बांधे पग पहरे जीव
णें पग सं तनारे अर बांधे पग ही बीछा पा-
हरणं और तकूं भला है॥२५॥ जैसा कांम तैसा
आदमी आदमी के बूते का कांम कहणं। अ
रणत कूं आस नै बोलणं दिन कूं चोकसी सें
बोलणं तो मन के भेद कूं कोई और न जांणें। 7

१६॥जो आपकूं [illegible] मलीन हीं लगै सो औ
१ रूं पैं भी मलीन जांणनां दरद आपके होय॥
तेसा ही सबके होता है॥१७॥बालक संदोस्ती
नहीं करनां करनां तौ आपबहू के ताबे का चिंत
रन रखनां॥परई बीज पर चितन चलांनां॥१८
हरांमसें जो बेजार है सो हलाल का दोस्त है॥
ऐसे बुरांसैं भलाई करनां सो भलांसें बुराई
करनां है॥१९॥बुड्डां सूं बड्डा बचन बोलणां॥
अरदा जाजो सीका आसंगा करनां कु हांडे १
सें कपड़े धोवणं है॥२०॥आसा वांन कूं निरा

मैं
सकरलो॥दरिद्र का आदर है॥ आपसें कुन
मांन बिन मांगे देणां लछमी का मनमांन है॥
२१॥आपणीं बस्त पराई बस्त सूं मिलावणी
नहीं देदेणां अनुक्रम॥२२॥जिनका भरोसा रख्या
का है तिनसूं कपट न राखिये रख्या के अरदेरे
बीच कपट रहे तौर ख्यात जनके न आसवै
जी॥२३॥अपणां माल किसी कूं दिखाणां नहीं
जो बरतणां सो दिखाणां॥जहां मान होता है त
हां आफत भी आती है॥जो माल सबनें देखा
जिससें आफत भी वाणां॥२४॥किसी का भ 8

नमारनेंनहीमारडालनेंअछ्या॥२४॥तकसी
८ रवारकूंमारनेंकाहुकमनकरियेजीवते
कूंजबचाहियेजबहीमारसकतेहैंमारेंपी
छेंमुसलतनरहतीहै॥२५॥बरजउगेसें
सावै अरअसतहोयजबसेंताजी
अरपाहरमेंफिरे अरकोटवालसेंबे
ररवै अैसेआदमीकूंनदीतीरकोबुढे
जाणो॥२६॥जोबसमोलनलीजेसादिनठि
प्पेंनलीजे।अरमोलभीनकराजेब्योपा ८
रकीचीजकाजोपहलीमोलहुवाअर

बेचणीनहींतोथोडीजहातबेचियो॥२७॥जो
जनआदरसंकुरणांजीआंपाछेंमीठीबु
लयाजेअपवादीजेएततिरषाराषिनंी
साजा॥२८॥सामुणएककेजुसीसेंछिपिजा
यअरजाबअोगुनएकदातारीसेंछिपतेहैं
॥२९॥कलजुगआवतहैसोजीवकेरषवाले
करतानहुंतुमसाहिराबासाच।सील।दया।
धर्म।हुनर।द्रव्य।उद्दिम।उपाय।मीठीबा
णी।नरमी॥३०॥सवाल।तोबलसमांणियेसो
कौनसेंमांणिये।जवाब।दसतांआपकीकैंनी 9

मनराजीरहेजिससें।२।स।जीवकाहेसेंसुष
८ पावे।ज।परमेश्वरजीराजीहुयेसें।३।स।कों
णवस्तकूंसर्वहेरतहें।ज।तीनवस्तकूंप्र
थमनेरोगपताकूं।दूसरेंपुष्परहणकूं।ती
सरेंसांचदोलतकूं।४।स।नेकीकीयाचाहेतो
क्याकरे।ज।बुराईहरएकजनकरे।५।स।कों
नगुणजोकरनेंसोंगुनहोताहे।ज।देकरमां
गेसोबुराऔगुनहे।६।स।कोंनबातसेंअकि
लबढे।ज।जेतीसांचबोलेजेतामनउजला
होयसोहीअकिलकाबढणहे।७।स।म

रदांनगीक्याहे।ज।मारसकेंऔरनहींमारे।८।
स।भलाकोंण।ज।बुराईनकरे।९।स।जीनव
किसकाबुरा।ज।भलाईकरसकेंऔरनहींक
रे।१।स।हुकमकेतेमांनये।ज।तीन।पहली
तोश्रीपरमेश्वरकासोधर्मपंथसत्रहे।दूस
रेंओसतारांका।तीसरेंअनदाताऔरमाता
पिताऔरगुरका।१०।स।मोतसेंबुराक्या।
।ज।आपकीरतऔरदरीद्र।११।स।कोंण।
बातअकिलकूंबिगाडे।ज।आपायकूं
सरेंनांऔरंमामकूंबिसरेंनांऔरलोल

चकरना ॥ २४ ॥ सा ॥ पराबी कोंण बातमें ॥ जा ॥ मू
१० ढाकना ढूकरणेंमें ॥ २५ ॥ सा ॥ फिकर कामू
लका ॥ जा ॥ नोहू ॥ २६ ॥ सा ॥ कुबुधिका मूला
का ॥ जा ॥ बेपार सी अरमनचाला की ॥ २७ ॥ सा ॥
दुनियामें भली बस्तका ॥ जा ॥ बिनमतलब
हरकिसीका भला करनां ॥ २८ ॥ सा ॥ मसलत
कोंणसें करिये ॥ जा ॥ जिसमें तीन गुण होय ॥
पहली तो धरमात्मा ॥ दूसरें बहुगुणी ॥ तीस
रें नेकांको हितू ॥ २९ ॥ सा ॥ जापातस्याहकों १०
णकूं दूर राखे ॥ जा ॥ बेअकिलकूं अरफूंवेचु

॰गलकूं ॥ अरजो नई बात अपने लालचकूं
बनायाकरै ॥ ३१ ॥ सा ॥ भलाई कोंण बातसूं आ
वै ॥ जा ॥ तीन बातसूं ॥ पहली तो लालच छोड
णेसें ॥ दूसरें देणां है सो बिनमांगे दो ॥ तीसरें
किसीका परदा न उघाडणेंसें ॥ ३२ ॥ सा ॥ कोंण
बात दूसरे बिन आछी न होय ॥ जा ॥ दुसमका
सीषणें अरदौलतका बढाणां ॥ ३३ ॥ सा ॥ कों
ण बातसूं प्यार कीजे ॥ जा ॥ तीन बातसूं ॥ पह
ली तो न्याय नीतसूं ॥ दूसरें कोमल बचनसूं ॥
तीसरें खामखर्मेसूं ॥ ३४ ॥ सा ॥ दुसमसी बेंको

गुण होय॥ जा॥ बडा है तिसैं जी बडाई सिवा
२२ य मिलै अर जस पावै नेक नांम होय॥२३॥ सा॥
स्यांणां मजबूत कौंण॥ जा॥ दुष मैं अपणां ध
र्म कूं न छोडै॥२४॥ सा॥ दौलतवांन कौंण॥ जा॥
पंडित बुधवांन साहिब हुंनर॥२५॥ सा॥ बडा
ई की निसांनी केती॥ जा॥ जेते आदमी के सि
र ऊपरि सांन कीया होय जेती॥२६॥ सा॥ कौंण
बात जो बडाई अर सोभा कूं घटावै॥ जा॥ जू
ठी बातैं अर चुगली पर निंदा करणां॥२७॥ २२
सा॥ कौंण जिनका मन अर बचन दिगै॥

नहीं॥ जा॥ जो सत्य धर्म कूं पालै॥२८॥ सा॥ कौं
ण बलवांन जो कडवी सैं मीठी होय॥ जा॥ धीरज
अर माता पिता गुर की आग्या॥२९॥ सा॥ बाब
ल कौंन जो कदे ही पूरण न होय॥ जा॥ कीर
त अर जस अर ऐसांन अर दांन॥३०॥ सा॥
अकिल बंद का कारै॥ जा॥ मन अर बचन कूं
घाटा करै तो चिगै नहीं॥३१॥ सा॥ कौंण रोग
जिसका इलाज नहीं॥ जा॥ मौत अर मूरषबि
मद्दे का इलाज नहीं॥३२॥ सा॥ कौंण बलाय
जिससैं आदमी डरता नहीं॥ जा॥ इसक अ

लालच॥३३॥स॥कुकोंणजोनीचसेंनीनीची
१२ जा॥मगाहूरीऽप्ररऽग्रहंकारऽग्ररलोभ॥३४॥स॥
कुकोंणजासैंसोजापावे॥जा॥नरमीऽग्ररमी
ठाबोलणां॥स॥कोंनबातऽग्रादमीकेरजी
रहणेंकीहै॥जा॥बडोंकीऽग्राग्याऽग्ररषा
छिंदकेहुकमकूंसिरपेंरषिलेंसे॥३५॥स॥
पिसताबाकिसबातकाऽग्रावे॥जा॥नाह
कगरीबकूंदुषदेलेंसेंऽग्ररदोलतनहीमे
गलेंसे॥३६॥शुभंभूयात्॥श्लोक॥ऽग्रष्टमे १२
कथष्टमेस्चेव:॥श्रीपंचसमस्तपा॥चतुर्नव

दयो स्चव:दुर्गायंत्रप्रकीर्तिता॥१॥छेद:
दूवेऽग्राठेनोहीदीसे:॥जो॥छ
केचोकेदीषे॥सातेतीयेपंप
चलावे:॥एकपांचनोवेग॥
ऽग्रावे॥२॥ [illegible]

८	१	६
३	५	७
४	९	२

Nasihat savā-sai. (completo)
Jaipur, 28 settembre 1914

9